JGi JAIN DEEMED-TO-BE UNIVERSITY | CENTER FOR MANAGEMENT STUDIES

आभास

एक नया एहसास

"अपने लक्ष्य को ऊँचा रखो और तब तक मत रुको जब तक आप उसे हासिल नहीं कर लेते है।"

हिन्दी विभाग की पत्रिका अंक 10

हिन्दी विभाग द्वारा

‘‘आभास’’

एक नया एहसास

अंक – 10

डॉ चैनराज रॉयचंद
अध्यक्ष
जै.वि.वि. न्यास

अध्यक्ष का सन्देश

सफलता प्राप्त करने का सबसे सरल मन्त्र है अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना और समय को अपनी मुट्ठी में बाँध कर रख लेना। जै.वि.वि. सी.एम.एस. इस अर्थ में अपने विद्यार्थियों को एक संपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान पर आधारित नहीं होंती, बल्कि उसमें व्यावहारिकता और कलात्मकता दोनों ही समाहित होती है। युवा पीढ़ी के समक्ष अनेक सोपान हैं जो उन्हें सफलता की उँचाइयों तक पहुंचा सकती है। अतः मानसिक और बौद्धिक दृष्टिकोंण में सतर्कता बरतना ज़रूरी है।

''आभास'' पत्रिका के नविन दृष्टिकोंण के दसवे प्रकाषन पर मैं यही सन्देश देना चाहूँगा की आत्मविश्वास और आत्मबल को टूटने न दें। आप सफलता की उड़ान भरेंगे।

उपकुलपति का सन्देश

मैं जानता हूँ की एक पत्रिका का प्रकाशन कोई आसान काम नहीं होता है। हिंदी पत्रिका ''आभास'' आपकी पहचान और आपके आंतरिक गुणों का परिचय देती है।

इस पत्रिका में छपे आलेख, कहानियाँ, कवितायें आदि हमारे छात्रों और विभाग के सदस्यों की सर्जनात्मक क्षमता के साक्षी बने है। ऐसा कहते हुए बेहद खुशी हो रही है कि हिंदी पत्रिका ''आभास'' आपके उद्देश्य 'performance is reality' को पूरी तरह साकार करती हुई नजर आती हैं।

आभास के इस एहसास को आपने जिस प्रकार सींचा है वह निसंदेह सराहनिय है। मैं संपादक मंडल और सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। ये कामना करता हूँ कि आप सदैव आगे बढ़े। आपकी मेहनत, लगन और ईमानदारी से संस्था के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्माण किया।

डॉ एन. सुंदरराजन
उपकुलपति
जै.वि.वि.

डॉ दिनेश नीलकंठ
निदेशक
सी.एम.एस. जै.वि.वि.

अध्यक्ष की कलम से

सी.एम.एस. परिवार के प्यारे सदस्यों,

''आभास'' पत्रिका के माध्यम से आप सभी से बात करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। आभास पत्रिका आपकी क्षमता, आपकी सोच आदि को समझने की एक नयी दृष्टि प्रदान करता है। पत्रिका के लिए लगी मेहनत, लगन और निष्ठा, निःसंदेह सराहनीय है। मैं सारे सदस्यों, संपादक मंडल और तमाम सहयोगियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सदैव कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर रहेंगे।

संपादकीय

एक विचार लें उस विचार को अपनी जिन्दगी बना लें उसके बारे में सोचिये, उसके सपने देखिये, उस विचार को जिए, आपका मन, आपकी मांसपेशियां, आपके शरीर का हर एक अंग सभी उस विचार से भरपूर हो और दूसरे सभी विचारों को छोड़ दें यही सफलता का तरीका है और कार्य ही सफलता की बुनियाद है। इसी तरह हमें अपने जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए।

हिन्दी साहित्य का इतिहास हमारे देश, हमारी संस्कृति और हमारे समाज का सच्चा आईना है।

साहित्य के विविध पहलुओं को सक्षम करने में व्यक्ति और समाज की आकांक्षा, बदलाव और निरंतरता का ही परिणाम है। अतः साहित्य निर्माण की इस निरंतरता में ठहराव का कोई स्थान नहीं है।

हिन्दी विभाग की ओर से निकलने वाली **''आभास''** नामक पत्रिका हमारी साहित्यिक गतिशीलता और सामाजिक अभिरुचि का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

प्रस्तुत अंक में हिन्दी साहित्य की विविध विधाएं जैसे– कहानी, कविता, लेख, आलेख, संस्मरण आदि को नए रूप में नयी पीढ़ी के द्वारा अभिव्यक्त करने की हमारी एक छोटी सी कोशिश है। किन्तु एक बात अवश्य कहना चाहूंगी कि सी.एम. एस. के द्वारा साहित्य के नए एहसास के साथ अभिव्यक्त करने का यह प्रयास अवश्य ही सराहनीय है। मैं अपने तमाम सहयोगी दलों के साथ उनका शुक्रिया अदा करती हूं कि आने वाले समय में हिन्दी साहित्य को नया आकार प्रदान करेंगे और हिन्दी साहित्य को नयी दिशा देंगे।

विभागाध्यक्ष

सुश्री शेफाली वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

सी.एम.एस.

जै.वि.वि.

सह संपादकीय पत्र

‘‘आभास – एक नया एहसास’’

आभास एक पत्रिका ही नहीं, बल्कि एक एहसास बन गया है। हिन्दी में लिखित कविताएं और कहानियों से भरपूर हिन्दी विभाग का एक श्रेष्ठ उपकरण हो गया है। साहित्य प्रेमी और कलाकारों के लिए यह एक मंच है जहां उनकी कला का प्रदर्शन हो और उन्हें एक मंच प्राप्त हो। उभरते हुए लेखकों और चित्रकारों के लिए आभास एक नया मंच है जहाँ वह अपनी प्रतिभा दर्शा सकते हैं।

इसी आशा और उम्मीद के साथ हम इस पत्रिका को बढ़ावा देते है और इसकी उज्ज्वल भविष्य की कामना करते है।

‘‘संकल्प – एक नयी पहल’’

वास्तविकता के साथ संकल्प एक ऐसा संघ बन गया है जो हिन्दी विभाग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस संघ की शुरुआत हमारे पूर्व अध्यापकों दवारा की गयी थी और अभी हमारी विभागाध्यक्ष सुश्री शेफाली वर्मा के नेतृत्व में हम इस संद्य को आगे बढ़ाने की पूर्ण रूप से कोशिश कर रहे हैं की भारत की भाषा और सभ्यता को अक्षुण्ण रख सकें और लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति प्यार, सम्मान एवं जागरूकता ला सकें।

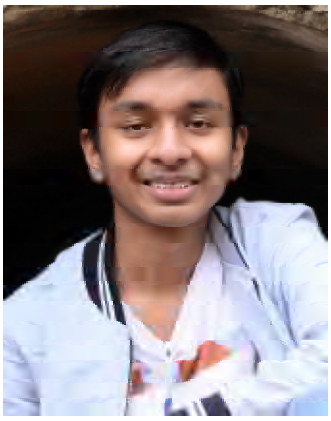

सह संपादक

श्रेष्ठ पोद्दार

5वी छमाही

'A' अनुभाग

रुह

काश कुछ ऐसा हो जाए
ये वक्त चलता रहे,
ये लम्हे चलते रहें,
ये पहर चलता रहे,
बस मेरी उम्र थम जाए।

मैं थाम लूँ उस ऊंगली को
जो कभी मुझे थामे चली थी।
वो खिलखिलाती हँसी
जो कभी मेरे साथ खेली थी।
बस इतनी सी ही तो ख्वाहिश है,
बे-वक्त के इस मुसाफिर की।

छोटी सी राह का जिसका
बस तीसरा हिस्सा है बाकी।
आकर क़रीब अपनों के और थोड़ा,
कुछ और अच्छा कर जाऊँ।

छोटे से इस सफर के
सुकून भरे पलों को
यादों में पिरो जाऊँ।
या फिर रहकर दूर उनसे,
ग़म के बवन्डर से बचाने को उनको,
बेरुखी वाला मुखौटा ओढ़ जाऊँ।

मैं समेट लूँ सारी यादें,
मैं सहेज लूँ सारे पलों को,
देख लूँ जी भर के
उन आँखों को, इस दुनिया में जिनसे
सबसे पहले रूबरू हुआ।

रहगुज़र हूँ तेरा, कि तूने जो भी दिया
झोली भर के दिया।
रहगुज़र हूँ तेरा, कि दिये हुए हौसले से तेरे
अपने दम पर कुछ किया।

रहगुज़र हूँ तेरा, कि कई ख्वाबों को अपने
मैंने हक़ीकत में जिया।
रहगुज़र हूँ तेरा, कि जरा से वक्त में ही
तेरे होने को समझ लिया।

ईबादतग़ार हूँ तेरा
शिकायतग़ार नहीं,
कि अलग बनाकर भी तूने
खास बना दिया।

श्रेष्ठ पोद्दार
3वी छमाही

शायरी

ये दिल्ली है मेरे यार!

इस शहर से कुछ इस तरह मुहब्बत हुई,
लगा कि जैसे अपना ही है
अब नजर नहीं हटती इन हसीन नजारों से,
ना जाने क्या जादू है दिल्ली की जज्बातों में!

हिमाचल की आँचल में दिल लगा कर तो देखो
बर्फ से सजा लेना अपने सपने!
हवाओं की ठंडी एहसास लिखेगी एक हसीन दासता
अगर मंजिल है यही, तो खूबसूरत है हर रास्ता!

निशिता
द्वितीय वर्ष

ए जिंदगी कुछ तो रहम कर
अब और क्या क्या दिखाएगा
इतनी छोटी सी उमर में
और कितना सिखाएगा
माना कि रंग बदलते हैं
अंधेरे में छाया भी साथ छोड़ देते हैं
लेकिन यह नाजुक दिल को तू ऐसे समझाएगा
ए जिंदगी और कितना इम्तिहान लेगा
चलते–चलते और कितना गिर आएगा

माना कांटे बहुत है रास्ते पर
लेकिन यह तो सब को कैसे बताएगा
ए जिंदगी बस कर अब तो
और कितना हमें रुलाएगा
माना कि यहां है सब पहने नकाब
मगर तू कितना नकाब हटा आएगा
ऐ जिंदगी और कितना तू सताएगा
कितनों को पराया मानेगा
माना कि यह रहा है अकेले चलने की
मगर तू कितनों को दूर करेगा

पूजा
तृतीय वर्ष

ममता

जब से जग में
आँखें खोली है मैंने
माँ तूने लिया ये प्रण
न आने दोगी आँच मुझे तुम
मैं हूं तेरा ही अंग
जग के सारे ताप सहे तूने
मुझे अपने पल्लु में ढक लिया
आँखों में तेरे पानी न आया
पर रोई अंदर से तूक्
छोटा था मैं समझ न पाया
छोटी-छोटी चीज़ों पे तुझे सुनाया
इन सबको तूने किया माफ
पूरे करने में तू
लगी मेरे सारे ख्वाब
तेरा है बस एक ही ख्वाब
तेरा बेटा बने नवाब
आज एक वादा करता हूं तुझसे
अब कोई गलती न होगी मुझसे
अब मेरी तुझसे है यही मांग
तेरे चेहरे पर चाहिए
बड़ी सी मुस्कान
माँ तेरी ममता और प्यार
नहीं चुका पाऊंगा उधार
नहीं चुका पाऊंगा ये उधार

सत्येन्द्र सरन
द्वितीय वर्ष

वाकिफ

कुछ यूँ तो मिल रही थी जिन्दगी,
मुझसे रुबरु हो रही थी,
रुख बादल रहे थे ख्वाहिशो के,
ख्वाहिशो की लहरो में बह रही थी जिंदगी

बदलता वक्त और बदलता मन किसी का नहीं
लोगो ने कहा,
पर क्या करे,
कांच की तलाश नहीं थी इसे
हीरे की आस में रह रही थी जिन्दगी

सृष्टि केजरीवाल
द्वितीय वर्ष

उल्लेख

भाग कर जाओगे कहां इस जिंदगी से

इस जिंदगी के हर मोड़ पर एक नई जिंदगी है

जरा सा सब्र मेरे मन

इतनी लालसा अच्छी नहीं

वही मनु य के दुख का कारण है

वही जीवन के विनाश का बाण है

हमें सब्र रखना चाहिए

अगर भाग्य में लिखा हो

तोबा अवश्य हमें मिलेगा।

किसी से नहीं वैर मुझको

किसी के लिए नहीं मन में गलत भाव

मैं तो केवल प्यार करना जानता हूं

क्योंकि यही मेरी मां की सिखाई सीख ह

उमंग अजीतसरिया
द्वितीय वर्ष

किसान

वहीं पेड़ पर मरता है वह जिसका बीज बोना था

पानी की कमी की वजह से वही तो सब जो होना था

पैसा लूटने की क्षमता नहीं थी तभी तो लाश बन के यहां सोना था

खोना था बस जिंदगी यहां खोना था

खाना समय पर देते हैं यह लोग गर्मी हो या सर्दी में

पैसे लूट थे उनसे यही लोग बिना बात की वर्दी में

तू गरीब का बच्चा या हो राजा का

पर खाएगा वही जो देता तुझे यह सुनार

पैसा ज्यादा तो मन करता बेकार

काम करता हूं जब स्वस्थ हो या बीमार

बस वचन देती है यह सरकार दौरा है यह अत्याचार

अब दिन हुए 4 बार बदला नहीं यहां का हाल

रोते हैं वह जब खून निकलता उसका लाल

देता है वह हमें तीन वक्त का खाना पर खुद हो रहा बेहाल

12 करोड़ किसानों की परवाह जिसमें

10 करोड़ कर्ज के दुख से चिट्टे पुकार

मौत का हो रहा शिकार

कुछ दे दो इनको अधिकार खुश होगा इनका परिवार

जय जवान जय किसान कुछ हो रहा ना इस नारे का प्रभाव

एक मरता है घर से एक मरता है ार्म से

जय जवान जय किसान कुछ नहीं हो रहा है इसका प्रभाव

इनके सर के ऊपर ज्यादा दबाव जिसे वह संभाल ना सके

यह सब मरते रहते हम बस बैठ के मोमबत्तियां जलाएं

बड़े–बड़े कंपनी के बीज और दवाई

खरीदना चाहते थे पर उनका दाम तो बढ़ा दिया

चुरा लिया इनके मुंह से खाना चुरा लिया

यह हाल रख के क्या खिलाएगा अपने परिवार को

कौन से स्कूल भेजेगा अपने बेटी बेटों को

जय जवान जय किसान कुछ नहीं हो रहा है इसका प्रभाव

इनके सर के ऊपर ज्यादा दबाव जिसे वह संभाल न सके

यह सब मरते रहते हैं हम बस बैठकर जलाएंगे मोमबत्तियां

किसानों के लिए प्रार्थना सर्व जनों सुखिनो भवंतु

अनिरुद्ध जोशी
द्वितीय वर्ष

ग़ज़ल

पहले बड़ा के दोस्ती, दिल में मेरे समा गये

फिर हमसे नाता तोड़ के, गम में मुझे डूबा गये

मेरे करीब बैठ के, हर बात पूछ ली मेरी

जब उनसे पूछा हाल तो, वह सिर्फ मुस्कुरा गये

उतरेगा अब कभी नहीं, मेरे जहन से वह नशा

आंखों से आंखें डाल के, नजरों से जो चढ़ा गये

मैंने तो उनके साथ में, कोई खता कभी न की

फिर किस गुनाह की वह मुझे, देकर के यूं सजा गये

कहने लगे वह एक दिन, है साथ चंद रोज का

तेरी मेरी जुदाई के, दिन अब करीब आ गये

जाने लगे तो कह गए, आना कभी हमारे पास

अपने नए मुकाम का, हमको पता लिखा गये

मैं उनको सारी उम्र ढूंढा, किया ना पा सके

वो जानबूझकर हमें, ऐसा पता बता गये

जाना था हमसे दूर तो, जाते बड़े ही शौक से

हमको तो किस लिए मगर, देख कर के यूं दगा गये

बेचौन दिल में आज भी, लियाकत मची है खलबली

क्योंकि वह बेवफा सनम आज फिर याद आ गये

हमीदुल्लाह रहीमी

कला

आदीती शारदा

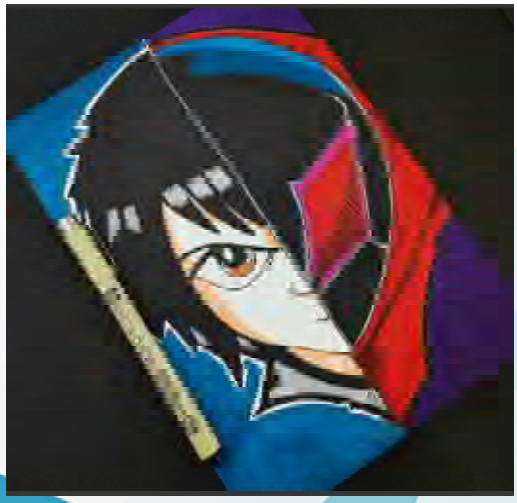

अमन कुमार गुप्ता

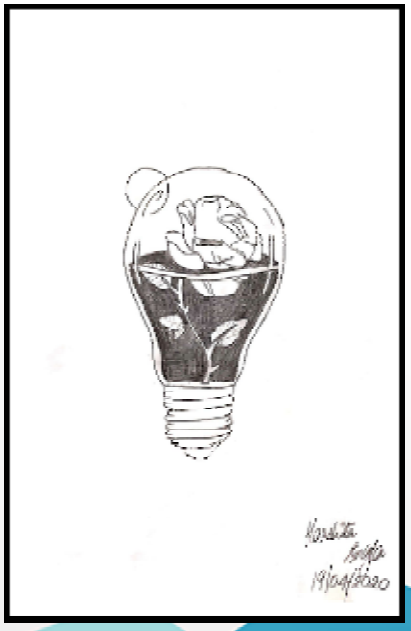

हर्षिता सिनघला

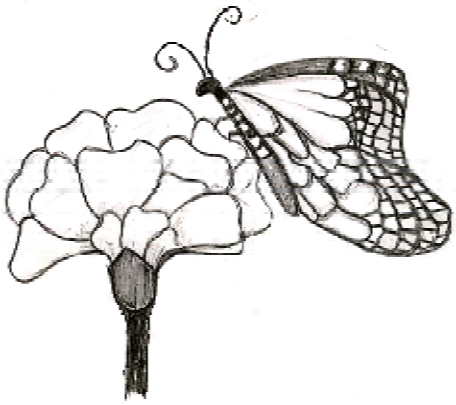

पूजा

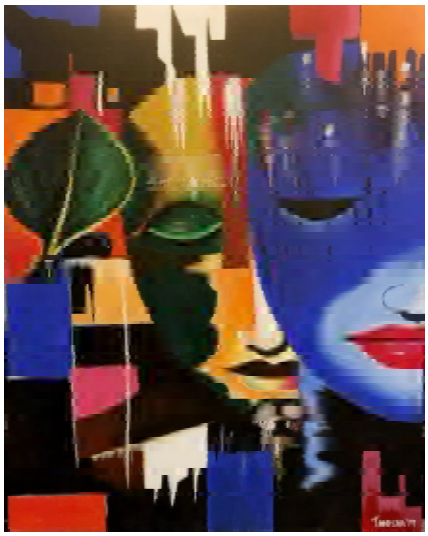

तनीषा अग्रवाल

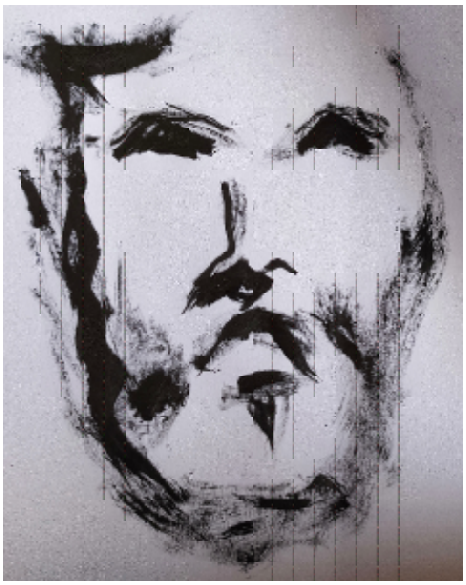

सलोनी गांधी

शौर्य टाक

महक सिंघी

संकल्प कार्यक्रम

संकल्प टीम

2019 – 20

गुरू–पूर्णिमा

खुशी इवेंट

विश्व हिन्दी दिवस

विद्यालय परिसर से

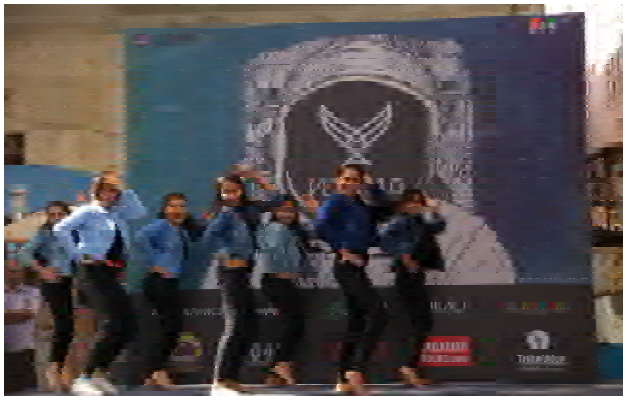

लास्या

JGi JAIN DEEMED-TO-BE UNIVERSITY | CENTER FOR MANAGEMENT STUDIES

Location Map